६०१/२१५

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा (पूर्व कसौटी - १५ जून, २०१४)

(समय : सुबह ९:०० से १२:००) **सत्संग प्रवीण - १**

सूचना : प्रश्न के बाद में दिए गए अंक उसी प्रश्न के उत्तर के पृष्ठ क्रम बताते हैं । **कुल गुण : १००**

विभाग-१ : श्री अक्षरपुरुषोत्तम उपासना - द्वितीय संस्करण, मार्च - २००७

प्र.१ निम्नलिखित किन्हीं दो विषय के संदर्भ में शास्त्र के तीन प्रमाण दीजिए । **[६]**
(संदर्भ शास्त्र का नाम और क्रमांक लिखना अनिवार्य है ।)

१. उत्पत्ति सर्ग (४६-५१) २. गुणातीत संत के लक्षण : वचनामृत के आधार पर (९१-९२)
३. साकार स्वरूप में रुचि (११-१३) ४. अक्षरब्रह्म - धामरूप में (११५-११६)

प्र.२ प्रमाण, सिद्धांत अथवा पंक्ति पर से विषय का शीर्षक दीजिए । **[५]**

उदाहरण : ''मारुं धाम छे रे, अक्षर अमृत जेनुं नाम । तेमां हुं रहुं रे, द्विभुज दिव्य सदा साकार ॥''
उत्तर : धाम में और पृथ्वी पर - दोनों जगह सदा साकार ।'

१. 'जो ब्रह्म है, वह निर्विकार तथा निरंश है, इसीलिए वह विकार को नहीं प्राप्त होता और उसका अंश भी नहीं पड़ता ।' (११३)
२. जिस पर परमपुरुष की कृपा रहती है, उसके किसी भी तरह के मलिन संस्कार नष्ट हो जाते हैं । (९५)
३. 'अक्षरधाम परात्पर है ।' (११८)
४. जिसमें भगवान सर्व प्रकार से निवास करते हों ऐसे जो संत हैं वे ही प्रत्यक्ष भगवान हैं । (६८)
५. महामोटो प्रताप प्रगटावी रे, रीत नौतम न्यारी चलावी रे । (५५)

प्र.३ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । **[४]**
सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहि दिया जाएगा ।

१. श्रीजीमहाराज सर्वोपरि - अन्य परमहंसों के अनुसार । (४४,४६)
(१) ☐ 'आद्य मध्य अंत्ये अवतार, थया अगणित थाशे अपार । (२) ☐ जेह धामने पामीने प्राणी, पाछुं पडवानुं नथी रे ।
(३) ☐ ऐसे मेरे जन ऐकांतिक, तेही सम और न कोई ।
(४) ☐ दिव्य चैतन्य अक्षर जेनुं घर छे जो, क्षर अक्षर थकी ए तो पर छे जो ।

२. प्रकट भगवान या भगवान के संत द्वारा मोक्ष । (७७-७८)
(१) ☐ मोक्ष के दाता, भगवान और साधु ये दो ही हैं । (२) ☐ प्रगट प्रभु के प्रभुना संत रे, तेह विना न उद्धरे जंत रे ।
(३) ☐ कल्पतरु सर्वना संकल्प सत्य करे, पासे जई प्रीतशुं सेवे ज्यारे;
(४) ☐ प्रकट भगवान हैं, प्रकट बातें हैं, परन्तु अन्यत्र तो चित्रित किए हुए सूर्य हैं ।

प्र.४ निम्नलिखित किसी एक प्रसंग का वर्णन कर के उसका सिद्धांत लिखें । **[४]**

१. मेरे कथन को परिवर्तित करने की शक्ति इनमें ही है । (१४१-१४२) २. पर्वतभाई को चौबीस अवतारों के दर्शन । (५३)
३. श्रीहरिलीलाकल्पतरु ग्रंथ की रचना । (६१)

प्र.५ किन्हीं दो विषयों के बारे में विवरण कीजिए । (बारह पंक्ति में) **[८]**

१. सद्. गुणातीतानन्द स्वामी मूल अक्षर क्यों हैं ? : शास्त्रीय प्रमाण (१२४-१२५)
२. दिव्यभाव (२३-२५)
३. भगवान में मनुष्यभाव देखने से हानियाँ । (२८-३०) ४. गुणातीतानन्द स्वामी मूल अक्षर हैं : स्वामी की बातें के अनुसार (१३७-१३८)

प्र.६ निम्नलिखित किन्हीं दो के बारे में कारण लिखें । (बारह पंक्ति में) **[८]**

१. श्रीजीमहाराज का पृथ्वी पर का प्राकट्य का निमित्त अन्य अवतारों से अधिकत्तम हैं । (३९-४१)
२. पुरुषोत्तम नारायण सर्वत्र व्यापक तथा मूर्तिमान ही हैं । (२०-२१)
३. अक्षर और पुरुषोत्तम के बीच सेवक और स्वामीभाव का अपृथक् सिद्ध संबंध है । (११९-१२०)
४. श्रीजीमहाराज सर्वोपरि एवं सब अवतारों के अवतारी हैं । यह समझना श्रीजीमहाराज के आश्रितों के लिए आवश्यक है । (३४-३६)

प्र.७ उपासना में क्या समझना चाहिए ? और क्या नहीं समझना चाहिए ? उसके आधार से निम्नलिखित विधानों की पूर्ति कीजिए । **[७]**

(उपासना में क्या समझना चाहिए ?)

१. अक्षरब्रह्म ही अक्षरधाम ..... निर्गुण कर देते हैं । (१५६) २. परब्रह्म ..... अद्वितीय हैं । (१५५)
३. श्रीजीमहाराज पूर्ण पुरुषोत्तम ..... प्रकट और दिव्य हैं । (१५५) ४. पुरुषोत्तम नारायण ..... अद्वितीय हैं । (१५६)

(उपासना में क्या नहीं समझना चाहिए ?)

५. अकेले अक्षरब्रह्म ..... नहीं समझना चाहिए । (१५८) ६. श्रीजीमहाराज के जूते ..... नहीं समझना चाहिए । (१५८)
७. अक्षरब्रह्म मूर्तिमान नहीं ..... तेज है, एसा नहीं समझना चाहिए । (१५८)

प्र.८ टिप्पणी लिखिए । - भगवान साकार कैसे हैं ? (१८-२०) **[५]**

(पृष्ठ पलटिये)

सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद द्वारा किये गये पूर्व कसौटी के आयोजन में मैंने स्वयं कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित रहकर ''**सत्संग प्रवीण-१**'' परीक्षा दी है । निम्नलिखित बातें सही हैं, जो आपको विदित हो ।

दिनांक महीना साल

परीक्षार्थी का जन्म दिन :- ☐☐ ☐☐ ☐☐☐☐

परीक्षा दिनांक और परीक्षा का समय :

परीक्षार्थी के हस्ताक्षर :

सूचना : सिर्फ़ उपस्थित परीक्षार्थी भूले बिना इस उपस्थिति स्लीप को काटकर, सभी विगत भरकर केन्द्र व्यवस्थापक को वापस कर दें । सिर्फ़ कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित परीक्षार्थी की उपस्थिति स्लीप इकट्ठा करके सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद को जमा करा दे । (अपूर्ण विवरणवाली उपस्थिति स्लीपें मान्य नहि होंगी ।)

विभाग-२ : सत्संग वाचनमाला भाग - ३ - प्रथम संस्करण, नवम्बर - २००२
और युगविभूति प्रमुखस्वामी महाराज - द्वितीय संस्करण, जून - २००७

प्र.९ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । **[९]**

१. ''क्या तुम स्वामी को रोज ऐसा भोजन करवाते हो ?'' (२७) **अथवा**
२. ''आप भी राज्य की वासना मत रखना वरना आपको भी दूसरा जन्म लेना पड़ेगा ।'' (६२-६३)
३. ''हमारे लिए तो दो अकाल पड़े ।'' (७२) **अथवा**
४. ''ईश्वर ने हाथ-पैर दिए हैं, तो किसी की चोरी करके हराम का क्यों खाते हो ?'' (४४-४५)
५. ''समाज में ईर्ष्या और द्वेष के स्थान पर शान्ति एवं करुणा का परचम लहराये ।'' (५५) **अथवा**
६. ''भारत में दुष्काल की स्थिति है, बरसात होने के लिए भगवान से प्रार्थना कर रहा हूँ ।'' (५८)

प्र.१० निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (नौ पंक्ति में) **[८]**

१. अगतराई में महाराज ने काठी हरिभक्तों को टोका । (६६-६७) **अथवा**
२. अरदेशरजी आचार्य महाराज की महिमा समझने लगे । (५०)
३. स्वामीश्री ने दलुभाई को गले लगा लिया । (३६) **अथवा** ४. हरिजन नवयुवकों के मन से हीनता का भाव मिट गया । (२६)

प्र.११ निम्नलिखित विषय पर प्रमाणसर विवरण लिखिए । (बारह पंक्ति में) **[८]**

१. शिवलालभाई की नम्रता (८०-८२) **अथवा** २. ब्रह्मचर्य पालन के आग्रही मुकुन्ददास (१७-१८)
३. डाह्याभाई के जीवन की कृतज्ञता (४७) **अथवा** ४. सेवक कौन है ? (२२)

प्र.१२ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । **[५]**

१. यमदंड नामक ग्रंथ की रचना किसने की थी ? (४०) २. गढपुर जाते यात्रिकों के लिए अच्छा विश्रामस्थल कहाँ था ? (६)
३. महाराज ने जलविहार करने के लिए लालजी भक्त को क्या लाने को बोला ? (३६)
४. स्वामीश्री सूरत की महावीर जनरल अस्पताल में किस लिए गये ? (४३) ५. स्वामीश्री की सुवर्णतुला कहाँ और कब हुई ? (३०)

प्र.१३ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । **[८]**

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहि दिया जाएगा ।

१. जूनागढ में रघुवीरजी महाराज ने गुणातीतानन्द स्वामी का किया हुआ समागम । (५४)
   (१) ☐ मंगला आरती के समय नित्यक्रम से निपटकर कथा में पहुँच जाते ।
   (२) ☐ खिचड़ी या बाटी और मूंग की दाल स्वयं ही बना लेते । (३) ☐ भोजन के बाद दोपहर को विश्राम करते ।
   (४) ☐ स्वामी ने उनके देहभाव की ग्रंथियाँ मिटा दी, उनको 'गुणातीत' बना दिए ।
२. कुशलकुंवरबा की संतों के प्रति आत्मीयता । (६१)
   (१) ☐ उत्तम मिठाईयाँ गाँव-शहरों से मंगवाती थी । (२) ☐ संतों के लिए अपने हाथों से रसोई बनाती थी ।
   (३) ☐ संतों भोजन में पानी न डाले ऐसी प्रार्थना श्रीजीमहाराज से की ।
   (४) ☐ गन्ने की गाडियाँ तथा ताजा गुड़ भिजवाते थे ।
३. स्वामीश्री के व्यक्तित्व से आकर्षित हुए धार्मिक नेता । (१५)
   (१) ☐ दलाई लामा (२) ☐ जगजीतसिंह (३) ☐ आर्कबिशप ऑफ केन्टरबरी (४) ☐ पोप जोन पाल (द्वितीय)
४. प्रमुखस्वामी महाराज का सम्मान किस किस देश की पार्लामेन्ट में हुआ ? (१६)
   (१) ☐ भारत (२) ☐ अमरीका (३) ☐ ब्रिटिश (४) ☐ केनेडा

विभाग - ३ : निबंध

प्र.१४ निम्नलिखित किसी एक विषय पर करीब ६० पंक्ति में निबंध लिखिए । **[१५]**

१. आदि साक्षर रत्न : श्री उल्लासराम पंडया (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) - सितम्बर - २०१३, पा.नं. ६ से ११)
२. जन्मजात साधुता के शिखर : प्रमुखस्वामी महाराज (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) - नवम्बर - २०१३, पा.नं. ४ से ९)
३. उपासना - प्रवर्तन की अजोड कटिबद्धता : शास्त्रीजी महाराज (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) - फरवरी - २०१४, पा.नं. २२ से २४, १८)

❊ ❊ ❊

सूचना : इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक ६ जुलाई, २०१४ के दिन होनेवाली मुख्य परीक्षा में पूछे जाएँगे । मुख्य परीक्षा में उत्तरवही के ईलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखें हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व मंजूरी बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'लेखाकार' या 'डमी राइटर' एवं 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तरवही रद मानी जाएगी । एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावट रद मानी जाएगी । काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । अस्पष्ट और पढ़ा ना जा सके ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे । अभ्यास क्रम में सामिल पुस्तक की अंतिम संस्करण का ही उपयोग करें । परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है ।

☞ **अगत्य की सूचना : सभी परीक्षार्थी अपनी संस्था की निम्नलिखित website - link पर से पुराने सालों के प्रश्नपत्र और उसके उकेलपत्र नि:शुल्क डाउनलोड कर सकते हैं और उसकी प्रिन्ट भी निकाल सकते हैं ।**

http://www.swaminarayan.org/satsangexams/pastpapers/index.htm